रात गहराती है, बेनी बाबू दर्द से कराहते हैं। उनके बगल का किसान भी दर्द से कराहता है। बेनी बाबू उससे कहते हैं, ''गठिया में बड़ा दर्द है भाई, लगता हैं मैं अब फिर उठकर खड़ा नहीं हो पाऊँगा।''

बेनी बाबू के बगल का किसान बीच-बीच में कराह उठता है। वे उसे सांत्वना देते हैं। किसान कहता है, ''पंडितजी, इन दोनों दर्दों में बहुत फर्क है। मुझे मालूम है, आपको कोई चोट नहीं लगी है।''

बेनी बाबू अपना दर्द भूलकर उदास हो जाते हैं। सोचते हैं–बिशू होता तो कहता–'एक दर्द हिंसक है और दूसरा अहिंसक।'

इसराइल

जन्म : गाँव महम्मदपुर जिला–छपरा (बिहार)

प्रमुख कृतियाँ : फ़र्क, रोजनामचा (कहानी संग्रह)

दिवंगत

मुहब्बत

–जगदंबा प्रसाद दीक्षित

जरूरी नहीं है फूला बाई का जिक्र। फिर भी एक बस्ती है, जिसे सबने देखा है। पहली बार मैं भौंचक रह गया था। पुराने मकानों में अजीब-अजीब लोग रहते थे–दूर-दूर से आये हुए लोग। लगता था पिछड़ गये हैं। आगे बढ़ने की लड़ाई में लगे हुए हैं। कुछ लड़कियां थीं, जो वेश्याएं थीं। कुछ लड़के - दलाल थे। दिन भर लोग खामोश रहते थे-सोये हुए। शाम से हलचल शुरू होती थी। पूरी सड़क गाड़ियों, दलालों और ग्राहकों से भरी होती थी। बड़े-बड़े होटलों की बत्तियां चमकने लगती थीं। इनमें पांच या तीन तारे होते थे या किसी में कोई तारा नहीं होता था। तारे दिखाई नहीं देते थे। हम उन्हें सिर्फ महसूस कर सकते थे।

दूर-दूर देशों के लोग यहां आते थे। देखकर पता चलता था कि गोरे हैं। अरब हैं। लोग खास तौर पर अरबों के आने का रास्ता देखते थे। दुकानों, होटलों, लड़कियों और दलालों को अरबों का इंतजार होता था। भिखारियों, बाजीगरों, हिजड़ों को भी अरबों का इंतजार होता था। अपने-अपने कमरों की ऊंचाइयों से अरब लोग नीचे की दुनिया को देखा करते थे। यहां हिजड़े नाचते थे। बाजीगर खेल दिखाते थे। भिखारी औरतें-बच्चे भीख मांगते थे। नटों के बच्चे सर्कस करते थे। हर खेल के बाद एक ही सवाल होता था-गरीब...भूखा...पेट के लिए खाना...अल्ला...रफीक़...रहम कर। सूखे-दुबले-फटेहाल हिंदुस्तानी अपना खाली पेट पीटते थे। औरतें काले-बीमार बच्चे दिखाती थीं। अरब ...रफीक़...रहमदिल अल्लाह के नाम पर ऊपर से नोट फेंकते थे। दुबले काले इंसान उन पर टूट पड़ते थे। सबमें समझौता हो गया था। नोटों को लेकर लड़ाइयां होती थीं...फिर नहीं होती थीं। लेकिन फिर और मांगते थे...अल्लाह के नाम पर ...रफीक...रहमदिल! अब अरब सिर्फ हंसते थे। कभी-कभी काग़ज के टुकड़े फेंकते

थे। भीड़ एक बार फिर दौड़ पड़ती थी।

हम सब लोग खुश थे। यहां रहना जरूरी था। सारी दौलत यहीं थी। सब कुछ यहीं था। सिर्फ रहने की जगह नहीं थी। इसका भी इंतजाम हो गया था। एक कोना था... एक खाट काफी थी। यहीं मैंने फूला बाई को देखा था। पचपन या साठ साल की थकी हुई काली औरत। बालों में बदरंग खिजाब लगया था। बालों की जड़ें सफेद हो रही थीं। कई जगह सफ़ेद बाल छूट भी गये थे। आते-जाते एक बार उसने मुझे गौर से देखा था। दूसरी बार मुसकरायी थी। तीसरी बार उसने आंख मार दी थी। मुझे क्या हुआ था, मालूम नहीं, शायद मैं घबरा गया था। इससे पहले किसी औरत ने ऐसा नहीं किया था। उस दिन से मैं होशियार हो गया था। आते-जाते हमेशा दूसरी तरफ देखता था। लेकिन फिर भी चीजें ठीक नहीं हो रही थी। किसी-न-किसी तरह फूला सामने आ जाती थी-और ज्यादा बनी-ठनी, और ज्यादा थकी हुई। जरा-सा खांसती। फिर आंखों के कोनों से ताकती। वही मुसकराहट। मैं परेशान हो गया था।

मगर लोग अब भी उसी तरह चल रहे थे। सूज़र समंदर में डूब जाता था। पुराने मकानों में लड़कियां बन-ठन कर तैयार हो जाती थीं। टैक्सियां या कारें होटलों में पहुंचा देती थीं। सामने की बड़ी इमारत की बत्तियां चमकती रहती थीं। अमीर हिंदुस्तानियों और अरबों की गाड़ियां वहां जरूर आती थीं। यह इमारत होटल नहीं थी। इसके फ्लैटों में शरीफ़ लोग रहते थे। लेकिन लड़कियां वहां भी होतीं थी। दलाल वहां भी घूमते थे। मैं अक्सर उकता जाता था। समंदर की लहरें भी दिल नहीं बहलाती थी। गांधी की मूर्ति आंखें बंद किये मुस्कुराती रहती थी। प्रेमी लोग लिपटते रहते थे। भिखमंगे....हिजड़े...दलाल.... ठेलेवाले... सब अपना काम करते रहते थे। मगर मुझे...मुझे क्या तकलीफ थी, मालूम नहीं, इस समय मुझे फूला बाई का ख्याल आ जाता था।

बड़ी इमारत के एक फ्लैट से कोई अक्सर यहीं नाम पुकारता था। फूला फौरन अंदर चली जाती थी। अंदर शायद काम करती थी। फिर बाहर आ जाती थी। एक बीड़ी लेकर बैठ जाती थी। लेकिन फौरन ही फिर पुकार होती थी। दम लेने की फुरसत भी नहीं मिलती थी। दुकानों से समान ले-ले कर अंदर पहुंचाती थी। होटल से चाय, दुकान से पान-सिगरेट वगैरह। उकता कर कभी-कभी मैं सोचता था कि मेरी सही जगह क्या है! इस भीड़ में मुझे किस तरफ जाना है? क्या मैं भी आगे बढ़ूं और दलालों की दुनिया में शामिल हो जाऊं? गांधी की मूर्ति के पास अरबों और अमीरों के सौदे पटाना शुरू कर दूं?

रात लेकिन हमेशा बहुत हो जाती थी। कभी आखिरी बस मिलती थी, कभी

नहीं। जूते घसीटता हुआ मैं पैदल उस ठिकाने पर पहुंच जाता था, जहां मेरी खटिया थी। पार्टनर कभी ड्यूटी पर होता था, कभी सोता रहता था। इधर जब से वह घर गया था, रात को लौटने पर खोली मुझे काटने दौड़ती थी। जितना ज्यादा हो सकता था, मैं बाहर रहता था। इस समय, जब मैं स्टेशन से बाहर आया, आखिरी बस जा चुकी थी। घड़ी में डेढ़ बज रहे थे। खाली रास्ते पर मैंने चलना शुरू कर दिया था। दारू के अड्डे खुल थे। मीट-अंडे के खोमचों के पास भीड़ थीं। रंडियों की तलाश अब भी जारी थी। ठिकाने पर पहुंचते दो-ढाई बज गये। सारी जगह सुनसान लगती थी। सिर्फ फ्लैटों की बत्तियां जल रही थीं। शायद कोई नशे में चीख रहा था। अंधेरे गलियारों से जब मैं गुज़रा तो लगा कि कोई खड़ा है। फूला बाई थी... मैं पहचान गया। पल भर रुक कर मैं आगे निकल गया।

लेकिन चाबी मेरे पास नहीं थीं शायद कहीं गिर गयी थी या कहीं रह गयी थीं। मैं समझ नहीं पाया कि क्या करूं! देर तक वहीं खड़ा रहा। फिर बाहर आ गया। फिर अंदर चला गया। इस तरह दो-तीन चक्कर हो गये। मुझे देखकर अब कुछ कुत्तों ने भूंकना शुरू कर दिया। इस समय फूला बाई अंधेरे से उजाले में आ गयी। मैंने देखा कि चेहरे पर बहुत-सा पाउडर लगाया गया था। बदरंग बालों में मुरझाया हुआ एक गजरा अटका हुआ था। एक अजीब-सी साड़ी पहनी थी, जो न जाने कब नयी रही होगी। पहली बार मुझे मालूम हुआ कि फूला भी रोज रात शायद ग्राहक तलाश करती थी। पहली बार उसने मुझसे कहा, 'क्या हो गया चक्कर क्यूं लगाते हो?'

मेरी समझ में नहीं आया कि क्या करूं! फिर भी मैंने कहा, 'मेरी किल्ली गुम हो गयी। खाली पे लॉक है।'

इस समय रात पूरी तरह सुनसान थी। बड़ी इमारत के 'मसाज पार्लर' से निकल कर कोई बड़ा आदमी कार का दरवाज़ा खोल रहा था? हलके उजाले में फूला चुपचाप खड़ी रही। मैं चलने लगा, तो बोली, 'जरा रुको तो... कैसा ताला है तुम्हारा?'

हिचकिचा कर मैंने उसे ताले के बारे में बताया। बोली, 'ऐसा करो...हमारी किल्ली लगा के देखो ना!'

उसकी चाल में लड़खड़ाहट थी। जब इमारत से लौटी, तो हाथ में चाबियों का गुच्छा था। मैंने कई चाबियां लगायीं। एक भी नहीं लगी। फिर उसने कोशिश की। चाबियों पर चाबियां बदलती रही। पता नहीं कैसे, ताला खुल गया। मैं पल भर वैसे ही खड़ा रह गया। अंदर जा कर बत्ती जलायी। अपने आप ही फूला अंदर आ गयी। इस

समय मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी कि उसकी तरफ देखूं, लेकिन मैं उसे देखने लगा। वह चेहरा उस उजाले में और भी काला-थका-बूढ़ा लग रहा था। बालों का बदरंग खिजाब, झुर्रियों पर पाउडर की परते और पुती हुई लाली। मुझे क्या लगा, मालूम नहीं। शायद बहुत बुरा लगा। शायद थोड़ा दुःख हुआ।

फूला बोली, 'मैं तुमकू... आते-जाते रोज देखती।' अब उसके होंठ धीरे-धीरे कांपने लगे। मुंह के कोनों में लार इकट्ठा हो गयी। रुक कर बोली, 'तुम कि नई... मेरी कू भोत अच्छे लगते।'

एकाएक ही मैं कुछ बोल नहीं सका। अजीब-सी चुप्पी पल भर छायी रही। अब फूला सम्भल गयी। बोली, 'तुमकू लगता कि मेरी उमर भोत जास्ती! नईं क्या? पर मैं सच्ची बोलती, मेरी उमर जास्ती नईं है।'

मुझे मालूम नहीं था, मैं क्या कहूं, फिर भी मैंने कहा, 'नईं, ये बात नईं। तुम मेरे को गलत समझा। मैं ऐसा आदमी नईं हूं।'

उसी तरह फूला ने कहा, 'नईं, सब आदमी लोग कमती उमर की छोकरी से मोहब्बत करते। पर मैं सच्ची बोलती, मेरा उमर जास्ती नईं। तब्बेत थोड़ा बिघड़ गया, बस!'

मैंने जैसे ज़िद करते हुए कहा, 'नईं, तुम मेरे को समझा नईं, मैं वो टाइप का आदमी नईं। मैं तुमकू बहुत अच्छा समझता, पर ... बोलते-बोलते में रुक गया। मालूम नहीं, क्या कह देता। फूला जैसे और संभल गयी। बोली, 'देखो ना, मैं तुमकू भोत पसंद करती। आते-जाते हमेशा देखती। तुम अकेले... मैं अकेली। मैं तो तुमकू... बोले तो... मोहोबत करती। और भी जास्ती मोहोबत करूंगी। क्यों' तो इस वास्ते कि मेरे कू भी मोहोबत मंगता। थोड़ा हेलप मंगता।

सुनसान रात के तीन बजे.... एक अकेले कमरे में...फूला मुझसे मुहब्बत और हेल्प की भीख मांग रही थी। उसके लिपे-पुते चेहरे पर अचानक इतनी बेबसी दिखाई दी कि मुझे बहुत तकलीफ हुई। लेकिन मैंने कहा, 'नई बाई, तुम मेरी बात समझो। मेरे को तुमसे कोई नफरत नईं है। पर मैं-मैं वो टाइप का आदमी ही नईं हूँ। नई समझी?

फूला ने कुछ नहीं कहा। अब उसका काला चेहरा और ज्यादा काला हो गया था। अब उसे कोई आशा नहीं थी। बड़ी देर तक उसी तरह चुपचाप खड़ी रही। धीरे-धीरे बोली, 'उमर जास्ती होने से क्या होता? मोहोबत नईं मंगता? हेल्प नईं मंगता?'

मैं चुप रहा। आखिर फूला ने कहा, 'चलो, जाने दो। कोई बात नईं। पर एक बात

बोलूं क्यों?'

मैं उसी तरह उसकी तरफ देखता रहा। वह बोली, 'मेरे कू थोड़ा पैसा मंगता चार-पांच रुपिया... उधारी। मैं जल्दी वापस कर देऊंगी। भरोसा करना, सच्ची बोलती।'

इस तरह फूला बाई से मेरी पहली बातचीत खत्म हुई। मैं अब भी उसी रास्ते आता और जाता था। बीड़ी फूंकती हुई फुला मुझे देखती थी। मुस्कुराती थी, लेकिन मुस्कराहट में अब पहले वाली बात नहीं थी। मेरे पास पैसों की बहुत कमी थी। फिर भी थोड़ा कुछ मैंने उसे दे दिया था। लेकिन बातचीत कभी नहीं हो पाती थी।

लेकिन एक रात... जब बिना कुछ खाये-पिये मैं सोने की कोशिश कर रहा था, दरवाजे पर दस्तक हुई। सामने फूला खड़ी थी। उसके मैले आंचल में कुछ ढका हुआ था। कुछ चिड़चिड़ा कर मैंने कहा, क्या है?'

आंचल के नीचे से एक रकाबी उसने मेरी तरफ बढ़ा दी। खोली में एक खुशबू-सी फैल गयी। प्लेट में पुलाब या इस तरह की कोई चीज थी। मैं उसकी तरफ़ देखता रह गया। उसने कहा, 'सुबू को प्लेट ले जाऊंगी। ऐसा खाली पेट नई सोने का?'

मुझे ताज्जुब हुआ था। उसको किसने बताया कि शाम मुझे खाना नहीं मिला था। इसके बाद कई बार ऐसा होने लगा। गुजरते समय कई बार वह मेरे चेहरे को देखती। उसे बहुत कुछ मालूम हो जाता था। कई बार उसने मुझे रोका। अंदर जाकर चुपचाप कोई रकाबी या प्लेट ले आयी। लेकिन बातचीत अब भी नहीं होती थी।

लेकिन अब वह मुझे बाहर भी मिलने लगी थी। समंदर के किनारे गांधी की मुस्कराती मूर्ति के पास कभी-कभी बीड़ी फूंकती हुई बैठी रहती थी। धीरे-धीरे मैंने उसके पास बैठना शुरू कर दिया था। अब वह ज्यादा थकी, ज्यादा हारी हुई मालूम होती थी। काम अब उससे होता नहीं था। 'मसाज पार्लर' में काम बहुत करवाते थे। रात को काम होता था। दिन में भी काम होता था। 'पार्लर' में कई लड़कियां थीं। रात को ये अरबों और हिंदुस्तानी रईसों की 'मालिश' करती थीं। बंद कमरों के अंदर से लगातार फूला की पुकार होती रहती थी। कभी यह पहुंचाओ...कभी वह पहुंचाओ! शराब...बर्फ...सोडा... सिगरेट...! बीच-बीच में लंबी चुप्पियां छा जाती थीं। खाना भी पकाना पड़ता था। बड़ी रात लड़कियां बहुत थक जाती थीं। फौरन खाना मांगती थी। फूला को बहुत गालियां देती थीं। नशे में कभी-कभी मारना शुरू कर देती थीं। कहां का गुस्सा कहां निकालती थीं। कोई-कोई कस्टमर खाना भी खाते थे। ये लोग खूब पैसा लुटाते थे। इतना पैसा है उनके पास कि सोच भी नहीं सकते। मगर लड़कियों को

बहुत कम मिलता था। 'पार्लर' के फ्लैट का भाड़ा ही पंद्रह हज़ार रुपिया महीना था। बचा हुआ बहुत-सा रुपिया 'पार्लर' वाला ले जाता था। कुछ दलाल लोग ले जाते थे। लड़कियों के लिए थोड़ा-सा बच जाता था। बस अच्छी तरह पहन-ओढ़ लेती थीं। लड़कियां बड़े बेमन से काम करती थीं। कई बार बुरी तरह पीटी जाती थीं। कुछ को चरस...और पता नहीं क्या-क्या की लत लग गयी थी।

दिन भर भटक कर शाम को मैं अकसर मूर्ति के चबूतरे पर बैठ जाता था। इस समय मुझे फूला का इंतजार होता था। अपने दिल का सारा गुबार अब मैं उसके सामने निकालने लगा था। लेकिन अकसर वह नहीं आ पाती थी। कई बार मूर्ति के पास रोशनी की जाती थी और भाषण होते थे। लेकिन टैक्सीवाले अरब अमीरों को यहां ले आते थे। इनके साथ हिंदुस्तानी या नेपाली लड़कियां होती थीं। छोटी-छोटी लड़कियों को अच्छे-अच्छे कपड़े पहना कर अरब लोग इन्हें सैर कराने लाते थे। इन सूखी-मुरझायी लड़कियों पर फॉरेन की जींस और कमीजें बड़ी अजीब लगती थीं। इन कपड़ों को पहली बार पहन कर ये लड़कियां बहुत खुश दिखाई देती थीं। हिंदुस्तानी दलाल और टैक्सी ड्राइवर हाथ बांधे पीछे-पीछे चलते थे। बीच-बीच में छोटी लड़कियों को डाँट-डाँट कर बताते रहते थे कि कैसी हरकत करनी चाहिए और कैसी नहीं। रेत के किनारे के रेस्तरां और होटल बहुत ऊंचे और महंगे थे। अरब लोग इन लड़कियों को वहां जरूर ले जाते थे। उस समय ऐसे खाने को पहली बार देखकर इन लड़कियों के आंखों में पता नहीं कैसी चमक आ जाती थी। फिर इस तरह खातीं कि बस देखते ही बनता था। अरब लोग इन लड़कियों को बहुत खुश करते थे। कभी घोड़ों पर बिठाते, कभी ऊंट पर। तरह-तरह से इनकी रंगीन तसवीरें उतरवाते थे। इतनी खुशियां एक साथ पाकर ये छोटी-छोटी लड़कियां उछल-उछल कर कभी यह मांगती थीं, कभी वह।

यह सब देख-देखकर फूला को बहुत गुस्सा आता था। एक दिन झल्ला कर बोली, 'सुनते क्या! एक दिन इनका भी वोई हाल होगा, जो मेरा हो रया है। मेरे कू भी ये सब में भोत मजा आता था।'

अचानक फूला जैसे रुआंसी हो गयी। हो सकता है, यह सही हो। शायद कभी फूला का भी एक जमाना रहा हो। यह बात सच हो कि दूर-दूर से लोग फूला का पता लगा कर आते थे। दलाल लोग बड़े-बड़े ग्राहकों को हमेशा फूला के बारे में बताते थे। लेकिन फूला की इस हालत को देखकर, पता नहीं क्यों, उसकी इन बातों पर भरोसा नहीं होता था।

इधर वह कुछ ज्यादा ही चिड़चिड़ाने लगी थी। हर चीज़... हर बात पर झल्ला उठती थी। अब सिर्फ लड़कियों, दलालों, पार्लरवाले को ही नहीं कोसती, सारी-सारी दुनिया को गलियां देती थी।

एक शाम, जब सूरज को डूबे काफी समय बीत गया था, गांधी की मुसकराती मूर्ति के पास हम दोनों बैठे थे। जोड़े प्यार कर रहे थे। लड़कियां ग्राहक तलाश कर रही थीं। हिजड़े नाच रहे थे और भिखारी भीख मांग रहे थे। फूला कुछ ज्यादा ही चुप थी। मैं भी चुपचाप तमाम लोगों को देख रहा थाा, जो बहुत खुश दिखाई दे रहे थे।

अचानक मैंने महसूस किया कि फूला मेरे पास सरक आयी है। लेकिन मैं अनजान बना रहा। वह कुछ और पास आ गयी। उसके शरीर का इतना पास होना मुझे कुछ ज्यादा तकलीफ देने लगा। फिर भी मैं बैठा रहा। अब उसने हाथ मेरे कंधे पर रख दिया और बोली, 'ऐसा क्या करते। चलो ना, अपुन चलेगा...किधर भी! अपुन मोहोबत करेगा।'

मैं अब भी उसी तरह बैठा रहा। उसका मुंह अब मेरे बहुत करीब आ गया था। उसने कहा, 'सच्ची, मैं तुमकू भोत मोहोबत करती...भोत। ऐसा क्या करते। चलो ना भी!'

अब मैं उठ कर खड़ा हो गया। मैंने कहा, 'एक बार बोला ना तुमको, मैं वो टाइप का आदमी नईं हूं। समझ में नईं आता क्या?'

मेरी आवाज में शायद कुछ गुस्सा था। पल भर वह उसी तरह बैठी रही, फिर खड़ी हो गयी। इस समय मैंने महसूस किया कि वह बहुत ज्यादा गुस्से में है। उसका काला चेहरा उस धुंधले अंधेरे में कांपने लगा। बहुत ही नंगी गालियां दे कर वह बोली, 'जा रे साला...जा-जा! तू क्या मोहोबत करेगा! हिजड़ा! तेरा बाबा भी मोहोबत नईं कर सकता। साला...कलेजा मंगता...कलेजा...मोहोबत के वास्ते। साला, तेरा बाप भी कभी किया। तू..तू..तू तो!'

इसके बाद नंगी गालियों की कोई हद नहीं रही। मैं चुपचाप उसे देखता रहा। मेरे मन में अब कोई गुस्सा नहीं था। उन गालियों का मुझे बुरा भी नहीं लग रहा था। उसे देख कर मुझे कुछ तकलीफ हो रही थी। वह बोलती रही, मैं सुनता रहा। वह थक गयी। लड़खड़ाती हुई चली गयी। मैं उसी तरह धुंधले अंधेरे में खड़ा रह गया। सागर की लहरों के थपेड़े पास आते गये और लोगों का शोर कम होता गया। लेकिन अब भी मेरी समझ में नहीं आया कि क्या करूं।

लेकिन इसके बाद फूला ने मेरी तरफ देखना बिल्कुल बंद कर दिया। कई बार मैं पास से गुजर जाता था, फिर भी वह मेरी तरफ नहीं देखती थी। क्या वह मुझसे हमेशा नाराज रहती थी? मुझे ऐसा नहीं लगता था। लगता था कि कोई सवाल है। शायद जिंदगी का सवाल! इस सवाल से अब वह अकेले ही लड़ेगी। अब उसे किसी की जरूरत नहीं हैं। मैं भी उसके लिए बेकार हूं। या शायद बहुत थक गयी है। अब किसी को देखना, किसी से बोलना उसे अच्छा नहीं लगता।

लेकिन मैं फूला से बोलना चाहता था। एक दिन मैं बहुत ज्यादा दु:खी हो गया था। इधर दफ्तरों और कंपनियों में लोगों को सिर्फ छह महीनों के लिए काम पर रखा जाता है। इससे काम करनेवाले हमेशा टेम्परेरी रहते हैं। उनके परमानेंट होने का कोई खतरा नहीं होता। हर छह महीने के बाद उन्हें काम से अलग कर दिया जाता है। इसके बाद नया अपाइंटमेंट दिया जाता है। इस बार कंपनी ने मुझे नया अपाइंटमेंट देने से इनकार कर दिया। अचानक ही मैं बेकार हो गया। इतना परेशान मैं पहले कभी नहीं हुआ था। लगा कि खूब रोऊं। उस दिन बहुत मन हो रहा था कि फूला से सब कुछ कह दूँ लेकिन मूर्ति के चबूतरे पर आना उसने बंद कर दिया था। लौटते समय रास्ते में मिली जरूर, लेकिन देख कर भी मुझे अनदेखा कर दिया। मैं वहां से बार-बार गुजरा, मगर उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं। उस समय मुझे उस पर गुस्सा भी आया था।

मेरा रूम पार्टनर हमेशा सोता रहता था। उसकी ड्यूटी हमेशा रात को रहती थी। मेरी-उसकी बातचीत बहुत कम हो पाती थी। अब मैं अकेला ही सागर किनारे दूर-दूर तक घूमता रहता था। इस इलाके में नयी-नयी और ऊंची-ऊंची बिल्डिंगे खूब बन रही थीं। हम लोग इन्हें बस देख सकते थे। मैंने सुना था कि बिल्डर लोग एक-एक फ्लैट के कई-कई लाख रुपये लेते हैं। बहुत-से बड़े-बड़े स्मगलर लोग बिल्डर बन जाते हैं, बहुत-से लोग लाखों रुपये दे कर ये फ्लैट खरीदते हैं। फिर लाखों रुपये खर्च कर इन फ्लैटों को सजाते हैं। ये सारी बातें सुनता था, लेकिन मुझे भरोसा नहीं होता था।

मैंने यह भी सुना था कि लोग बहुत जल्द अमीर हो जाते हैं। इस बात पर भी मुझे भरोसा नहीं होता था।

इन दिनों मेरे मन में फूला से बात करने की बड़ी इच्छा होती थी। दिन भर धक्के खा कर शाम जब मैं लौटता था, तो हर रोज मेरे पास एक नयी कहानी होती थी। ये कहानियां अकसर निराशा, बेइज्जती और दु:ख की कहानियां होती थीं। काम मिलना बड़ा मुश्किल हो रहा था। हर जगह अपने-अपने लोगों को काम दिया जा रहा था। ये सब कहानियां मैं पहले की तरह ही फूला को सुनाना चाहता था। लेकिन अब फूला ने

दिखाई देना भी बंद कर दिया था।

एक दिन जब मैं लौटा, तो बहुत खुश था। अगले दो-चार दिनों में मेरा काम पर लगना पक्का हो गया था। उम्मीद थी कि इस बार छह महीने वाली नौकरी नहीं होगी, पक्का हो जाने की पूरी आशा थी। मैं इतना खुश था कि किसी भी हालत में फूला से बात करना चाहता था। काफी रात तक मैं मूर्तिवाले चबूतरे पर बैठा रहा। मेरे सामने हंसते-खेलते लोग गुजर गये। मेरे सामने सूरज पानी में डूब गया। लेकिन फूला नहीं आयी। यह कोई नयी बात नहीं थी। रात तक बैठ कर मैं वहां से उठा गया। इमारत के सामने से गुजरते-गुजरते कई बार मैंने उधर देखा। फूला कहीं दिखाई नहीं दी। यह भी कोई नयी बात नहीं थी। लेकिन इस बार मुझे कुछ अजीब-सा लगा। मुझे फिर ख्याल आया कि पिछले कई दिनों से मैंने उसे नहीं देखा है। क्या हुआ? क्या वह कहीं और चली गयी? इस ख्याल से मैं कुछ परेशान हो गया। मैं किसी से फूला के बारे में पूछना चाहता था, लेकिन यहां कोई किसी से बात ही नहीं करता था।

दो-तीन दिन और गुजर गये। 'मसाज पार्लर' की बत्तियां बड़ी रात तक चमकती रहती थीं। बार-बार आते हुए.. जाते हुए... मैंने ध्यान से देखा, फूला कहीं नहीं थी। मुझे मालूम हो गया, फूला कहीं चली गयी। शायद मुझे काफी बुरा लगा। लेकिन मैं ऊंची इमारतों में रहनेवाले लोगों की बातें सोचने लगा। लाखों रुपये खर्च करनेवाले लोगों की बातें सोचने लगा। स्मगलरों, बिल्डरों, अरब अमीरों के साथ घूमती छोटी लड़कियों.. सभी की बातें सोचने लगा। लेकिन फूला के बारे में भी सोचता रहा।

लेकिन एक रात एक और ही बात हो गयी। मुझे लौटने में काफी देर हो गयी थी। अगले दिन मुझे काम पर बुलाया गया था। मैं थका था। लेकिन काफी खुश था। आखिरी बस छूट जाने के कारण मैं पैदल चल कर ही ठिकाने पर पहुंचा था। जब मैं अंधेरी गली में दाखिल हो रहा था, मैंने देखा कि लांड्री की दुकान के तख्ते पर कोई औरत पड़ी है। मैं आगे निकल गया। लेकिन फिर लौट आया। हाँ, यह फूला ही थी। मैं कुछ समझ नहीं पाया। इस समय रात के दो बज रहे थे। सड़क करीब-करीब खाली ही थी। लड़कियां और दलाल जा चुके थे। मुझे लगा कि फूला सो गयी है। लेकिन मैं फिर गुजरा और मुझे लगा कि नहीं, सोयी नहीं है। शायद छोकरियों के साथ इसने भी बहुत शराब पी ली है। मैं अपनी खोली तक गया। ताला खोलने से पहले फिर लौट आया। अब मुझे लगा कि फूला बेहोश है। कुछ हिचकिचा कर मैंने आवाज दी, 'फूला! फूला बाई! कोई जवाब नहीं आया। अब मैं उसके एकदम पास पहुंच गया। मैंने उसे हिलाया और ...और मुझे लगा कि फूला बहुत बीमार है। उसका बदन

बहुत ज्यादा गरम है और मुंह के चारों तरफ कै फैली हुई है। अचानक ही सब कुछ समझ में आ गया। शायद फूला कई दिनों से बीमार थी। मुझसे झगड़ते समय भी शायद बीमार थी। पार्लरवालों ने शायद आज उसे निकाल दिया। वहां से निकल कर वह किसी तरह तख्ते तक पहुंची.. या शायद लोग उसे यहां डाल गये। इसके बाद...! इसके बाद मेरी समझ में नहीं आया कि क्या करूं! क्या मैं फूला को उसी तरह वहां छोड़ दूं और चला जाऊं? मुझे लगा कि ऐसा नहीं हो सकता। वहां अंधेरी गली में कोई नहीं था, जिससे मैं कुछ कह सकता। सिर्फ ऊंची इमारतों की बत्तियां चमक रही थीं। और सड़क पर एक-दो टैक्सीवाले अपनी-अपनी टैक्सियों में सो गये थे। मैं चाहता था कि किसी को पुकारूं, आवाज दूं, लेकिन वहां कोई नहीं था।

उस समय मैंने हिसाब लगाया कि मेरे पास कुछ कितने रुपये बचे हैं। इसके बाद मैंने एक टैक्सीवाले को जगाने की कोशिश की। मुश्किल-ही-मुश्किल थी। फिर भी मैंने सोच लिया था कि अब क्या करना है।

इसी तरह रात बीतती गयी थी। दो अस्पतालों ने उसे लेने से इंकार कर दिया। म्युनिसिपल अस्पताल ठसाठस भरा था। मैंने बड़ी मिन्नतें की थी। नर्सों के ड्यूटी रूम में एक बिस्तर डाल कर उसे लिटा दिया गया था। सलाइन की बोतल लगा दी गयी थी। बड़ी नर्स ने मुझसे कहा कि मैं बोतल की जगह दूसरी ला दूं। अस्पताल में दवाइयां भी नहीं हैं। मैं बारह से खरीद कर दवाइयां ले आऊं। लेकिन मैं चुपचाप सुबह का इंतजार कर रहा था। वार्डों में, गलियारों मे, पलंगों पर, जमीन पर, हर जगह मरीज-ही-मरीज पड़े थे। नर्सों ने कहा था कि इंजेक्शन भी लाना होगा। बहुत-सी चीजों की जरूरत थी। लेकिन हमारे पास कुछ नहीं था। फिर भी मैं सुबह का इंतजार कर रहा था। और बेंच पर बैठे-बैठे ही सुबह हो गयी थी। मुझे नहीं मालूम था कि यह कैसी सुबह थी। लोगों ने चलना-फिरना और गाड़ियों ने दौड़ना शुरू कर दिया था। मैंने तमाम लोगों के बारे में सोचा था। ये लोग थोड़ी-बहुत मदद कर सकते थे। ड्यूटी रूम में जा कर मैंने एक बार फिर फूला की तरफ देखा था। वह अब भी बेहोश थी। चितकबरे बाल बिखरे हुए थे और वह पहले से ज्यादा कुरूप लग रही थी। इसके बाद मैंने चलना शुरू कर दिया था।

दिन भर चलता रहा। इस जगह से उस जगह और उस जगह से उस जगह। इंडिया इंटरनेशनल कॉरपोरेशन ने मुझे काम पर लेने से इनकार कर दिया। मुझे बहुत दुःख हुआ। मेरी सारी आशाएं मिट्टी में मिल गयीं। इस बार मुझे बहुत भरोसा था, काम जरूर लग जायेगा। सुबह-शाम की चिंता मिट जायेगी। मुझे लगा कि मैं जैसे

फूटपाथ पर आ गया हूं। शाम होते-होते मैं लौट आया। इस समय दवाइयां और सलाइन की बोतलें मैंने खरीद ली थीं। कुछ लोगों ने थोड़े-थोड़े पैसे दे दिये थे। मैं बिल्कुल थक गया था।

जब मैं अस्पताल पहुंचा, तो फूला की हालत बहुत खराब थी। उसके मुंह पर, कानों तक कै फैली हुई थी और बिस्तर भी कै में सना हुआ था। उसकी सांस घरघरा रही थी। लगता था कि किसी भी समय उखड़ जायेगी। लेकिन फिर भी उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं था। इस समय मुझे लगा कि फूला मर जायेगी। पता नहीं क्यों, मुझे यह भी लगा कि हे भगवान, फूला को इस तरह मरना नहीं चाहिए। किसी भी तरह उसे बचना चाहिए।

मैं दौड़ कर बड़ी सिस्टर के पास गया था। बड़ी मुश्किल से उसने मेरी तरफ ध्यान दिया था। फिर एक डॉक्टर आया था। उसने बातया था कि कै फेफड़ों में चली गयी है। फूला पड़ी हुई कै करती थी और किसी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया था। अब एक मशीन लायी गयी। मशीन घर्र-घर्र चलने लगी। मुंह के अंदर नली डाल कर डॉक्टर चारों तरफ हिलाने लगा। अब फूला एक-एक सांस खींचने के लिए बिलबिलाने लगी। बिलबिला कर सांस खींचती थी। छटपटा कर आंखें खोल चारों तरफ देखती थी। अब मुझे बार-बार लगने लगा कि किसी भी तरह उसे बच जाना चाहिए। बच कर क्या होगा? बच कर कहां जायेगी? मुझे कुछ भी मालूम नहीं था। बस, यही लग रहा था कि उसे बचना चाहिए।

मशीन चलती रही और आवाज आती रही। फूला बिलबिलाती रही और आवाज आती रही। धीरे-धीरे रात हो गयी और सभी आवाजें चुप हो गयीं। अब मशीन हटा दी गयी और बोतल फिर लगा दी गयी। अब मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं? नर्स और डाक्टर कोई बताने को तैयार नहीं था कि क्या होगा! ऑक्सीजन के सारे सिलेंडर खाली पड़े थे। या दो-तीन थे, जो मरीजों पर लगे हुए थे। मैं बैठा रहा। फिर मैं बाहर आ गया। फिर मैं सोचने लगा कि रात क्या होगा? क्या मैं वहीं कहीं सो जाऊं? लेकिन ऐसी कोई जगह नहीं थी। रात कुछ हो गया, तो क्या फूला का दुनिया में कोई है? क्या हमारा दुनिया में कोई है? तब मुझे लगा था कि हमारा कोई नहीं है... हमीं अपने सब कुछ हैं।

अब मैं वहीं लौट आया था। जहां स्मगलर, अरब, अमीर, लड़कियां, दलाल, हिजड़े.. सब अपना काम कर रहे थे। कई सितारों वाले होटलों में बत्तियां जगमगा रही थीं और महंगे रेस्तरांओं में अजीब धुनें बज रही थी। 'मसाज पार्लर' के सामने खूबसूरत

गाड़ियां खड़ी थीं। आज शायद कोई खास दिन था। गांधी जी की मूर्ति को लट्टुओं से सजाया गया था और सामने कोई नेता भाषण कर रहा था। काफी भीड़ लगी हुई थी। इस समय नेता गांधी जी, पंडित जी बगैरह की महानता का बखान कर रहा था और एक दलाल एक कारवाले को पटाने की कोशिश कर रहा था।

तब मुझे अचानक पहली बार खयाल आया कि मैं किस दुनिया में हूं? किसने इसे ऐसा बना दिया है? मैं क्या करूं? इसे ऐसा ही छोड़ कर अपनी आंखें बन्द कर लूं? चारों तरफ दलालों की भीड़ है। मैं भी दलालों की दुनिया में–दलालों के दलालों की दुनिया में शामिल नहीं कर सकता। मैं बेकार, बेघर, बेसहारा सही, पर मैं दलालों की दुनिया में शामिल नहीं हो सकता। नौकरी नहीं मिलेगी...कभी नहीं। कोई बात नहीं। फूला मर जायेगी, कोई बात नहीं। रास्ता मुझे मालूम नहीं, कोई बात नहीं। इन सबके लिए मेरे अंदर नफरत है। वह हमशा जिंदा रहेगी। वही मुझे रास्ता दिखायेगी।

रात भर आवाजें आती रहीं। रात भर बाजे बजते रहे और धूंने गूंजती रहीं। रात भर बत्तियां जलती रहीं। रात भर..मैं सो नहीं सका या शायद सो गया और सपने देखता रहा। फूला मर गयी और बाजे बजते रहे... धुने गूंजती रही...बत्तियां झिलमिलाती रहीं। बार–बार मैं जाग कर उठ बैठा। बार–बार मैं सो गया। बार–बार फूला मरती गयी।

लेकिन जब सुबह हो गयी, तो फूला मरी नहीं, जिंदा थी। मैं सबसे पहले अस्पताल पहुंचा था। बोतल और नली को हटा दिया गया था। नर्स ने कहा कि मैं चाय–कॉफी दूध भी ला कर उसे पिलाऊँ।

एक गिलास में चाय ले कर जब मैं उसके पास बैठा, तो आंखे खोल कर उसने मेरी तरफ देखा। मैंने चम्मच से चाय दी। उसने चुपचाप पी ली। एक बार फिर उसने मेरी तरफ देखा। फिर चुपचाप आंखें बंद कर लीं।

लेकिन इसी समय बड़ी नर्स ने आ कर कहा मैं उसे ले जाऊं और फौरन वह जगह खाली कर दूं। इमर्जेंसी में उसे रख लिया गया था। अब जान के लिए खतरा नहीं है। अब ड्यूटी रूम में उसे रखा नहीं जा सकता। अस्पताल में कोई जगह नहीं है। बाकी दवाइयां मैं उसे घर ले जा कर दूं। तब मैंने सोचा था...घर? घर ले जाऊँ? कहां है घर? 'मसाज पार्लर' वाले उसे रखेंगे? काफी समय मैंने उसी तरह गुजार दिया था।

अचानक बड़ी नर्स बहुत तेजी से मेरे पास आयी। फूला को न ले जाने के लिए उसने मुझे बहुत डांटा। आवाज दे कर उसने कई वार्ड बॉय बुला लिये। आखिरी बार उसने मुझसे कहा कि अगर मैं फूला को नहीं ले जाऊंगा, तो वह उसे बाहर डलवा

देगी। इस बार मैं चुप नहीं रह सका। फूला के पास पहुंच कर मैंने कहा, 'फूला बाई...उठो! अब यहां से चलना है।'

फूला उठने की कोशिश करने लगी, लेकिन उठा नहीं गया। तब आगे बढ़ कर मैंने सहारा दिया। किसी तरह उठ कर बैठ गयी। फिर सहारे–सहारे खड़ी हो गयी। फिर घिसट–घिसट कर हम दोनों ने किसी तरह चलना शुरू कर दिया। घिसटते हुए हम अस्पताल के फाटक पर आ गये। अचानक वह ठहर गयी। मैंने देखा कि कुछ कह रही है। मैंने सुनने की कोशिश की। कांपती आवाज में उसने कहा, 'तुम..तुम..नईं आता तो...तो मर जाती!'

इस समय उसकी आंखें डबडबायी हुई थीं। अचानक मैं जोरों से हंस पड़ा... हंसता रहा। वह देखती रही। हंसते हुए मैंने कहा, 'तुम...बोली थीं ना ...कि मैं ...मुहब्बत नहीं कर सकता। अभी देखा ना, मैं कैसी मुहब्बत करता!...बोलो!

लेकिन फिर इसी समय मैं अचानक बहुत गंभीर हो गया। मैंने कहा, 'मगर...मैं...वो टाइप का आदमी नईं हू...समझ गयीं ना!

इस समय घिसटते हुए..., लड़खड़ाते हुए... हम अस्पताल से बाहर निकल रहे थे। लेकिन...हमें नहीं मालूम था...कि किधर जाना है!

जगदंबा प्रसाद दीक्षित

जन्म : 1935, बालाघाट (म.प्र.)

प्रमुख कृतियाँ : मुरदाघर, इतिवृत, कटा हुआ आसमान (उपन्यास) शुरुआत तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह)